18

सशस्त्र बल और आंतरिक सुरक्षा

पिछले अध्याय में आपने सशस्त्र बलों की आपदा प्रबंधन और शांति स्थापना के दौरान उनकी भूमिका के बारे में पढ़ा। सशस्त्र बल देश के भीतर गड़बड़ी और विद्रोहों से निपटने में भी भूमिका निभाते हैं। आपको यह समझना चाहिए कि जब अपने देश को बाहरी खतरों से बचाने की बात होती है तो यह सभी देशों के लिए लगभग एक-सी होती है।

बाहरी खतरे सीमा से जुड़े होते हैं जबकि आंतरिक खतरे देश के लोगों से ही होते हैं, जो राजनीतिक और विचारधारा के कारण होते हैं जैसे वामपंथी उग्रवादी इत्यादि। आंतरिक सुरक्षा बनाए रखना गृह मंत्रालय का दायित्व है परंतु जब केंद्रीय रिजर्व सुरक्षा बल स्थिति को नहीं संभाल पाता, तब सशस्त्र बलों को भी बुलाया जाता है।

इस अध्याय में हम भारत की आंतरिक सुरक्षा में विशेष रूप से भारतीय सेना तथा भारत की गुप्तचर एजेन्सियों जैसे इन्टेलिजेन्स ब्यूरो (IB) और रिसर्च एंड एनालिसिस (RAW) की भूमिका के बारे में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद, आप :

- आंतरिक सुरक्षा में भारतीय सेना की भूमिका को समझ कर उसकी व्याख्या कर सकेंगे;
- भारत की रणनीतिक संपतियों की रक्षा में लगे विशेष बलों के बारे में जान सकेंगे;
- भारत की आंतरिक सुरक्षा में भारतीय गुप्तचर एजेंसियों आई.बी. (IB) और रॉ (RAW) की भूमिका स्पष्ट कर सकेंगे।

18.1 भारतीय सशस्त्र बलों की भूमिका

हमारे देश ने विद्रोह और आतंकवाद की समस्या का बरसों मुकाबला किया है। जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर के राज्यों में विद्रोह और आतंकवाद का प्रभाव रहा है। इन क्षेत्रों में विद्रोह और आतंकवाद के फलस्वरूप हिंसा में अनेक नागरिक और सुरक्षा में लगे जवान मारे गए।

हमारे सशस्त्र बल इन क्षेत्रों के विद्रोहियों और आतंकवादियों से भारतीय नागरिकों और एकता को सुरक्षित रखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यद्यपि इन कार्रवाइयों में संलग्न भारतीय सशस्त्र बलों की गतिविधियों की प्रकृति इन क्षेत्रों में उपजे विद्रोह के विशिष्ट कारणों से बिल्कुल अलग प्रकार की हैं।

आइए हम नीचे दिए गए चित्र के माध्यम से भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा विद्रोह और आतंकवाद के विरुद्ध लड़ने की दोहरी भूमिका को समझें।

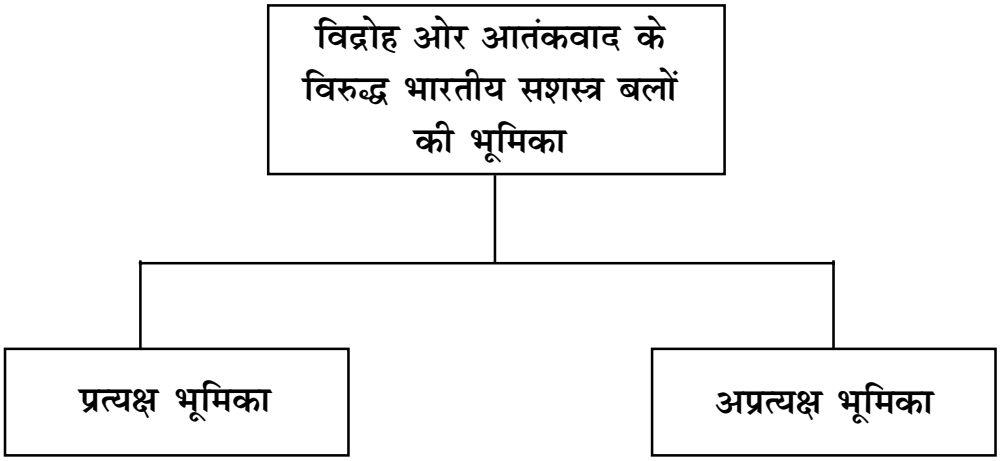

चित्र 18.1 विद्रोह/आतंकवाद के विरुद्ध भारतीय सशस्त्र बलों की दोहरी भूमिका

18.1.1 प्रत्यक्ष भूमिका

दशकों से भारतीय सशस्त्र बल जम्मू और कश्मीर तथा पूर्वोत्तर के राज्यों में विद्रोह और आतंकवाद के विरुद्ध प्रत्यक्ष भूमिका निभा रहे हैं। ऐसा तब हो रहा है जबकि भारतीय सेना को मूलत: खतरों से बचाने के लिए प्रशिक्षित और तैयार किया गया है। हालाँकि भारतीय सेना की इस संवेदनशील क्षेत्रों में प्रत्यक्ष भूमिका इस कारण है कि भारत में सामाजिक अशांति को उकसाने और फैलाने में तथा विद्रोह भड़काने में बाहरी ताकतों का बहुत बड़ा हाथ है। स्थिति इस प्रकार की है कि केवल सी.आर.पी.एफ. (केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल) विद्रोहियों से निपटने और शांति बनाए रखने का काम अकेले नहीं कर सकती। जम्मू कश्मीर में हमारा पश्चिम में स्थित पड़ोसी पाकिस्तान विद्रोह और आतंकवाद की समस्या को मुख्य रूप से भड़काता है।

तीन दशकों से कश्मीर घाटी में काम कर रहे आतंकवादियों को सीधे पाकिस्तान से सहायता मिलती है। पाकिस्तान ने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में आतंकवादी कैंप बनाए हुए हैं। पाकिस्तान आतंकवादियों को निम्नलिखित सेवाएँ प्रदान करता है।

- नए भर्ती किए गए आतंकवादियों के लिए प्रशिक्षण शिविर।
- भारतीय सीमा के पार से आतंकवादी हमले करने के लिए ठिकाने उपलब्ध करवाना।
- जम्मू-कश्मीर में कार्रवाई के लिए आतंकवादियों को गोला-बारुद और संचार के यंत्र उपलब्ध करवाना।

अत: जम्मू-कश्मीर में सीमा पार के आतंकवाद की समस्या से निपटने के लिए भारतीय सेना को हिंसा कम करने तथा शांति बहाल करने का काम सौंपा गया है।

भारतीय सेना की प्रत्यक्ष भागीदारी के एक भाग के रूप में भारतीय सेना ने विद्रोह विरोधी एक बल 'राष्ट्रीय राईफल्स' का गठन किया है जिसको जम्मू कश्मीर की ऊँची चोटियों पर विद्रोह विरोधी कार्रवाइयों के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया है।

पूर्वोत्तर में अनेक विद्रोही समूह जैसे युनाइटेड लिब्रेशन फ्रंट आफ इन्डिया (ULFA), नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट आफ बोडोलैंड, युनाइटिड नेशनल लिब्रेशन फ्रंट (UNLF) भारत और म्यांमार की खुली सीमा पर भारतीय सरकार के विरुद्ध गतिविधियाँ चला रहे हैं। इन आतंकवादी समूहों के म्यांमार में ठिकाने हैं और अनेक दक्षिण-पूर्वी एशियाई देश इन समूहों को हथियार और गोला-बारुद उपलब्ध करवा रहे हैं।

इन सीमाओं पर भौगोलिक स्थिति के कारण, जिसमें पहाड़, वादियाँ और घने जंगल हैं, बाढ़ नहीं लगाई जा सकती। इसलिए आतंकवादी/विद्रोही समूह अपनी गतिविधियाँ चलाने के लिए आसानी से भारत में आ और जा सकते हैं। सीमा की प्रकृति के कारण भारतीय सुरक्षा बलों के लिए सीमाओं की सुरक्षा और पहरेदारी करना बहुत ही कठिन है।

असम राईफल्स

जम्मू-कश्मीर में राष्ट्रीय राईफल्स की भांति पूर्वोत्तर राज्यों के कठिन क्षेत्रों में विद्रोह विरोधी कार्रवाइयाँ करने के लिए एक विशेष बल असम राईफल्स बनाया गया है। 1835 में कछार लेवी के नाम से गठित असम राईफल्स भारत में सबसे पुराना अर्द्धसैनिक बल है। इस बल का गठन मुख्य रूप से असम के जलोढ़ मैदानों की पहाड़ी रास्तों पर बसे जंगली और लड़ाकू कबीलों से रक्षा करने के लिए किया गया था। यह सबसे पहले गठित की गई इकाई थी जो बाद में असम राईफल्स के रूप में परिवर्तित हो गई।

यह बल एक शक्तिशाली संगठन है जिसमें 46 बटालियन और उससे जुड़ी कमांड और प्रशासनिक इकाईयाँ हैं। इसको सरकार ने ज्ञापन द्वारा भारत-म्यांमार सीमा प्रहरी बल के रूप में गठित किया गया था और यह एक गुप्तचर एजेंसी का नेतृत्व भी करता है। असम राईफल्स के नीचे दिए गए लोगों को ध्यान से देखिए-

चित्र 18.2 असम राईफल्स का लोगो

अत: असम राईफल्स कौन से कार्य करता है? उसके कुछ विशिष्ट कार्य निम्नलिखित हैं-

- सेना के नियंत्रण के अंतर्गत उत्तर-पूर्व तथा ऐसे अन्य क्षेत्रों में जहाँ आवश्यक हो विद्रोह विरोधी कार्रवाइयाँ करना।
- शांति और छद्म युद्ध के दौरान इंडो-चायना और इंडो-म्यांमार सीमाओं पर सुरक्षा को सुनिश्चित करना।
- युद्ध के दौरान युद्ध क्षेत्र के पीछी की सुरक्षा को बनाए रखना। आंतरिक सुरक्षा की स्थिति में केंद्रीय सरकार के बल के रूप में, जब स्थिति केंद्रीय अर्द्धसैनिक बलों के नियंत्रण से बाहर चली जाए-तब अंत से पहले एक हस्तक्षेपकारी बल के रूप में कार्य करना।

पाठगत प्रश्न 18.1

1. रिक्त स्थान भरिए-

   (a) भारतीय सेना के जम्मू-कश्मीर में विद्रोह विरोधी गठित विशेष बल का नाम ..... है।

   (b) पूर्वोत्तर राज्य में कार्रवाई कर रहे भारत के सबसे पुराने अर्द्धसैनिक बल का नाम ..... है, जो पूरी तरह से सेना के जवानों से ही संगठिक है।

   (c) उत्तर-पूर्वी राज्यों के विद्रोही भारत सरकार के विरुद्ध विद्रोही गतिविधियाँ चलाने के लिए ..... अंतर्राष्ट्रीय सीमा का प्रयोग करते हैं।

18.1.2 अप्रत्यक्ष भूमिका

अब तक हमने देखा कि भारतीय सेना जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर राज्यों में, वहाँ की जटिल स्थिति और बाहरी हस्तक्षेप, विद्रोह और आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में प्रत्यक्ष भूमिका निभा रही है। हालाँकि मध्य भारत में नक्सल विद्रोहियों द्वारा निर्मित सुरक्षा खतरा जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर के खतरों से बिल्कुल अलग तरह का है। मध्य भारत में विद्रोही गतिविधियाँ मुख्य रूप से भारत की जन-जातीय पट्टी में सामाजिक-आर्थिक समस्या के कारण से हैं। नक्सली विद्रोह में लगे लोग ऐसे भटके हुए भारतीय हैं जिन्हें भारत सरकार के विरुद्ध हथियार उठा कर कम्यूनिस्ट शासक स्थापित करने के लिए बहकाया जाता है।

इस तथ्य के बावजूद के नक्सली भारत सरकार और साधारण लोगों के विरुद्ध दशकों से हिंसक सशस्त्र संघर्ष कर रहे हैं, भारत की सरकार उनके विरुद्ध प्रत्यक्ष रूप से अपनी सेना को प्रयोग करने से बचती रही है। हमें इसके मौलिक कारण को समझना चाहिए। यह दो कारणों से हो रहा है-

- पहला कारण यह है कि नक्सल विद्रोह को चलाने वाले लोग भारत के जन-जातीय (कबिलाई) पट्टी से सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले राजनीतिक रूप से बहकावे में आए लोग हैं।

- दूसरा तथ्य यह है कि यह हमारे देश की सीमाओं से दूर, यह मध्य भारत में चल रहा है जिसमें बाहरी घटकों द्वारा नक्सल समस्या का प्रयोग करके भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा की समस्या को निर्मित करने के अवसर कम हैं।

हमें उपरोक्त तथ्यों से जरुर समझना चाहिए कि भारतीय सेना का मूल उद्देश्य नागरिकों की बाहरी खतरों से रक्षा करना है और उसको नक्सल विरोधी कार्रवाइयों को काम नहीं सौंपा गया क्योंकि इसका कार्य यह लगाया जाएगा कि भारत सरकार अपने नागरिकों के विरुद्ध भारतीय सेना का प्रयोग कर रही है।

यद्यपि नक्सली सशस्त्र हैं और उन्हें रोकने के लिए बल की आवश्यकता है। भारत सरकार अपने अर्द्धसैनिक बल केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल और उस राज्य के पुलिस का नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में प्रयोग कर रही है। अब तक भारतीय सेना ने नक्सलवाद के विरुद्ध अप्रत्यक्ष भूमिका निभाई है।

आइए हम भारतीय सेना द्वारा निभाई गई अप्रत्यक्ष भूमिका को देखें-

- भारतीय सेना सी.आर.पी.एफ. के कमांडोस् को जंगली युद्ध तथा आई.ई.डी. (परिष्कृत विस्फोटक यंत्र) को डिफ्यूज़ करने के विरुद्ध प्रमुखत से प्रयोग किया जाता है।
- भारतीय वायुसेना नक्सल विद्रोह से प्रभावित क्षेत्रों से, जहाँ विद्रोह विरोधी गतिविधियाँ चल रहीं हैं, अर्द्धसैनिक बलों को घायल जवानों को तुरंत चिकित्सकीय सहायता पहुँचाने के लिए हेलीकाप्टर्स लगा कर बाहर निकलती है। गत वर्षों में भारतीय वायुसेना ने अपने परिवहन हेलीकाप्टर्स एम-17 को नक्सलियों से लड़ रहे जवानों के यातायात के लिए प्रयोग किया था।

इसके अतिरिक्त भातरीय सेना ने अपने टोही विमानों को नक्सली हरकतों एवं उनकी गतिविधियों को पहचान कर प्राप्त सूचनाओं को जमीन पर लड़ रहे सी.आर.पी.एफ. कमांडोज़ के साथ सांझा करने के लिए भी प्रयोग किया है।

18.1.3 भारत की रणनीतिक संपतियों की रक्षा करना

भारत की आंतरिक सुरक्षा में संलग्न भारतीय सेना का एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य भारत की रणनीतिक संपतियों की रक्षा करना होता है। भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा भारत की रणनीतिक संपतियों की रक्षा करने की भूमिका में जाने से पहले हमें यह अवश्य जानना चाहिए कि रणनीति संपतियां क्या होती हैं?

राष्ट्र की रणनीतिक संपतियों को अभिप्राय महत्वपूर्ण सैनिक और नागरिक संरचनाओं से है जो देश की सुरक्षा, प्रौद्योगिकी उन्नति और आर्थिक प्रगति के लिए आवश्यक हैं।

भारत की रणनीतिक संपतियों में निम्नलिखित को शामिल किया जाता है-

- सैनिक ठिकाने
- बंदरगाहें और हवाई अड्डे
- तेलशोधक कारखाने

टिप्पणी

- परमाणु ऊर्जा संयंत्र
- राष्ट्रीय राजधानी-संसद
- मुख्य नदियों पर बने महत्वपूर्ण सेतु (पुल)
- डैग (बाँध) जैसे भाखड़-नांगल बाँध
- अपतटीय (तट से दूर) तेल संयंत्र

युद्ध के दौरान सेना की तीनों शाखाओं को अपनी कार्रवाइयों के लिए इन ढाँचे का होना बहुत अनिवार्य और आवश्यक है। नैसेना की बंदरगाहें और हवाई अड्डे जैसे परिसंपतियाँ सर्वाधिक खतरे में होती हैं क्योंकि आतंकवादी तथा अन्य लड़ाका बल उन्हें क्षति पहुँचाने की कोशिश कर सकते हैं क्योंकि अपने ठिकानों पर खड़े होने से वे खतरों के दायरे में आ जाते हैं।

2016 में पठानकोट हवाई अड्डे पर आतंकवादी हमला इस बात का उदाहरण है कि आतंकवादी किस प्रकार भारत की रणनीतिक परिसम्पतियों पर आक्रमण कर सकते हैं। अत: हमारे सशस्त्र बलों का यह महत्वपूर्ण कर्तव्य है कि वह अपनी रणनीतिक परिसम्पतियों की रक्षा करें।

18.2 विशेष बल

सशस्त्र बलों के कुछ विशिष्ट मंडल जिन्हें भारत की रणनीतिक परिसम्पतियों की रक्षा का दायित्व सौंपा गया है-

- राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (NSG) एक विशेष बल इकाई है जिसके जवान भारतीय सेना से लिए जाते हैं। इस बल का मूल कार्य आतंकवाद के विरुद्ध लड़ना है ताकि राज्यों को आंतरिक गड़बड़ी से बचाया जा सके। राष्ट्रीय सुरक्षागार्ड महत्वपूर्ण आंतरिक सुरक्षा कार्रवाइयाँ करते हैं जैसे आतंकवादी हमलों में शिकार हुए लोगों को बचाना, आतंकवादियों को मारने तथा अपहरण के शिकार लोगों को बचाना। आपको आतंकवादियों के चंगुल में फँसे लोगों को बचाने के कई उदाहरण मिल जाएँगे।
- मारकोस (मार्कोस) : यह नौसेना की एक विशेष बल की इकाई है। इसको विशेष रूप से नौसेना के अड्डों और परिसंपतियों की रक्षा का काम सौंपा गया है। वे आतंकवादियों के विरुद्ध जल-स्थलीय एवं पूर्व-आभासी कार्रवाइयाँ करते हैं। वे नौसेना में राष्ट्रीय सुरक्षागार्ड की प्रतिलिपि के समान हैं।

  मार्कोस कमांडोज ने 2008 के मुम्बई आक्रमण में राष्ट्रीय सुरक्षागार्ड के साथ मिलकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। मार्कोस जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद विरोधी कार्रवाइयों में सक्रिय भूमिका निभाती है।
- गरुड़ कमांडो बल : यह वायुसेना के विशेष बल की एक इकाई है जो सेना और नौसेना की कमांडो इकाईयों के समान है।

गरुड़ कमांडो बल की सबसे महत्वपूर्ण कार्य हवाईअड्डों और अन्य स्थलीय प्रतिष्ठानों की रक्षा करना है।

2018 के पठानकोट हवाईअड्डे पर हमले के समय गरुड़ कमांडोज ने आक्रमण करने वाले आतंकवादियों को मारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

पाठगत प्रश्न 18.2

1. आतंकवाद और बंधक बनाए गए लोगों को बचाने की कार्रवाई हेतु भारतीय सेना के जवानों से बनाए गए विशेष बल का क्या नाम है?
2. भारतीय नौसेना का जल-स्थलीय कार्रवाई करने के लिए बनाए गए विशेष बल का क्या नाम है, जिसको नौसेना के ठिकानों तथा परिसंपतियों को बचाने का काम सौंपा गया है।
3. भारतीय वायु सेना के कमांडो दल का क्या नाम है जिसे हवाईअड्डों तथा वायुसेना के स्थलीय प्रतिष्ठानों को बचाने का काम सौंपा गया है।

18.3 भारतीय गुप्तचर एजेंसियां और भारत की आंतरिक सुरक्षा

हमारी गुप्तचर एजेंसियाँ भारत की आंतरिक सुरक्षा को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आतंकवाद के घातक खतरे को केवल प्रभावी गुप्तचरी के तंत्र से ही रोका जा सकता है जो हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा का एक अनिवार्य अंग है।

हमारे जैसे राष्ट्र, जिसके सामने आंतरिक और बाहरी आतंकवाद के अनेक चुनौनियाँ हैं, के पास गुप्तचरी की दो विशेष एजेंसियाँ हैं जो भारत के अंदर से तथा भारत के बाहर गुप्त सूचनाएँ एकत्र करती हैं, जिनको नीचे चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है।

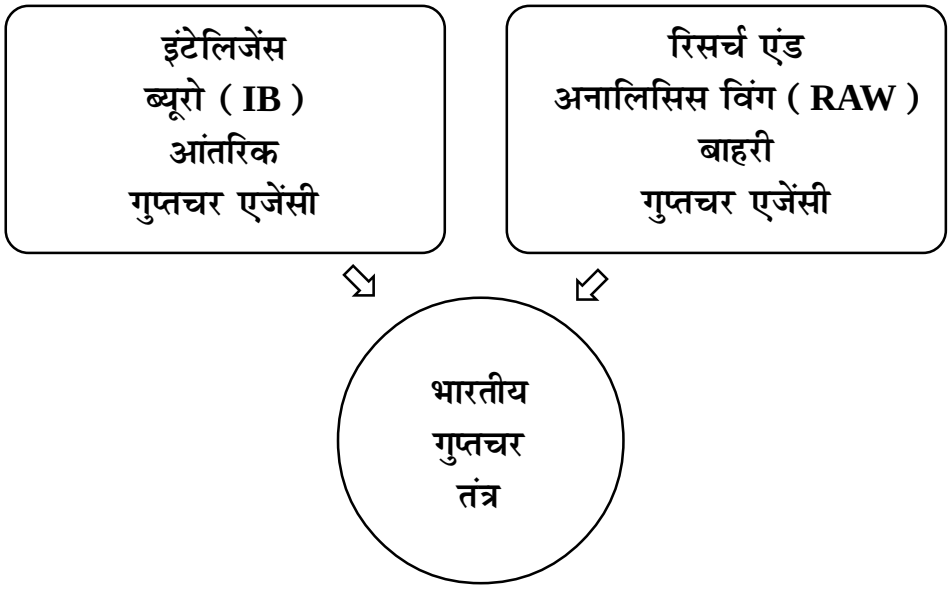

भारत की गुप्तचर एजेन्सियाँ

18.3.1. इंटेलिजेंस ब्यूरो (IB)

इंटेलिजेंस ब्यूरो भारत की सबसे पुरानी गुप्तचर एजेंसी है, जिसका गठन ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में 1887 में किया गया था। यह भारत की आंतरिक सुरक्षा एजेंसी है, जो घरेलू खतरों से निपटने के लिए बनी है। तकनीकी रूप से IB गृह मंत्रालय के अंतर्गत आती है। आई.बी. आतंक विरोधी, जासूसी के विरुद्ध जासूसी करने, सीमा क्षेत्रों में जासूसी करने, प्रतिष्ठानों की रक्षा तथा अलगाववादी कार्रवाइयों के विरुद्ध कार्य करने के लिए उत्तरदायी है।

1960 के दशक तक आई.बी. के पास आंतरिक ओर बाहरी गुप्तचरी का काम था। हालांकि 1968 में RAW (रॉ) के बनने के बाद आई.बी. पूरी तरह आंतरिक गुप्तचरी के काम से संबद्ध है।

18.3.2 रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (RAW)

रिसर्च एंड एनालिसिस विंग मूलत: विदेशों के लिए गुप्तचर एजेंसी है। 1965 से पूर्व भारतीय चीन और भारत-पाक युद्ध में गुप्त सूचनाओं की असफलता के बाद विदेश की गुप्त सूचनाओं को एकत्र करने के लिए एक प्रतिबद्ध एजेंसी की जरुरत महसूस की गई जिसके फलस्वरुप 1968 में श्री रामेश्वरनाथ कॉव की नेतृत्व में रॉ (RAW) गठन किया गया था।

हमें नोट करना चाहिए कि अपने गठन के कुछ ही वर्षों के बाद रॉ (RAW) ने 1971 में बंगलादेश की स्वतंत्रता और 1975 में सिक्किम के भारत में विलय में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की। आज रॉ को विश्व की सर्वोत्तम गुप्तचर एजेंसियों में से एक माना जाता है। रॉ का मूल कार्य भारत के शत्रु पड़ोसी देशों से गुप्त सूचनाएँ एकत्र करके हमारे देश के विरुद्ध उनकी योजना के बारे में जानना तथा भारत को हानि पहुँचाने के उनके इरादों को असफल करना है।

पाठगत प्रश्न 18.3

1. रिक्त स्थान भरिए-

   (a) भारत की विदेशों से गुप्त सूचनाएं एकत्र करने वाली एजेन्सी रॉ (RAW) का गठन ..... में किया गया था।

   (b) रॉ के पहले निदेशक का नाम ..... था।?

आपने क्या सीखा

- आतंक विरोधी और विद्रोह विरोधी कार्रवाइयों में भारतीय सशस्त्र बलों की भूमिका।
- भारत की आंतरिक सुरक्षा में सशस्त्र बलों की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष भूमिका।
- असम राईफल्स तथा देश की बाहरी और आंतरिक सुरक्षा में इसकी भूमिका।
- हमारे देश की रणनीतिक परिसंपतियां और उनकी रक्षा।

- हमारे देश की रणनीतिक परिसंपतियों की रक्षा के लिए कुछ विशेष बल गठित किए गए हैं।
- भारत की गुप्तचर एजेंसियां विशेष रूप से इंटेलिजेंस ब्यूरो (प्ठ) और रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (RAW)

पाठान्त प्रश्न

1. भारत की आंतरिक सुरक्षा को बनाए रखने में भारतीय सेना की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष भूमिका स्पष्ट कीजिए।
2. भारतीय सेना के उन विशेष बलों की पहचान कीजिए जिन्हें भारत की रणनीतिक संपतियों की रक्षा का कार्या सौंपा गया है।
3. भारत की आंतरिक और बाहरी सुरक्षा के लिए काम कर रही गुप्तचर एजेंसियों के महत्व को स्पष्ट कीजिए।
4. असम राईफल्स कौन से विशेष कार्य करते हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

18.1

1. राष्ट्रीय राईफल्स
2. असम राईफल्स
3. इंडो-म्यांमार

18.2

1. राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (NSG)
2. मार्कोस
3. गरुड़ कमांड बल

18.3

1. (a) 1968

   (b) श्री रामेश्वरनाथ कॉव